श्रीमहाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ

नगरह + बैसी जहांगीरपुर (माता दरबार) नवगछिया (शुचिक्षेत्र) भागलपुर
बिहार, पिन - 853204, भारत

(संक्षिप्त इतिहास)

लेखक – स्वामी आगमानन्द

प्रकाशक : मानस प्रकाशन नवगछिया

श्रीमहाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ

प्रथम संस्करण : २५/१०/२००३ ई०
द्वितीय संस्करण : २३/०१/२०१३ ई० सोमवार, विक्रमसंवत् २०६८ माघमौनी अमावस्या
तृतीय संस्करण : २९/१०/२०१६ कालीपूजा
प्रथम संस्करण प्रकाशक : श्री सुभाषचन्द्र पाण्डेय, (SBI) मुमताज मुहल्ला, नवगछिया
द्वितीय संस्करण एवं प्रस्तुत तृतीय प्रकाशक : श्री राजकमल चौधरी एवं नीलकमल चौधरी महन्त नगर बरमसिया, कटिहार, बाड़ा (सिहौल), सुपौल, सहरसा

© लेखकाधीन

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

१. श्रीकृष्णा बुक सेलर, स्टेशन रोड, भागलपुर
२. पुस्तकघर (स्टेट बैंक के सामने) नवगछिया
३. लावण्य पुस्तक भंडार, श्याम बाजार, बौंसी
४. माया मेडिकल हॉल काली वाड़ी कटिहार
५. गुरु-ग्रंथ मंदिरम, बूढ़ानाथ, भागलपुर
६. अन्य पुस्तक केन्द्रों पर

सहयोग राशि : १५/-
प्रकाशक : मानस प्रकाशन, नवगछिया

मुद्रक : सृजन प्रेस, भागलपुर

निवेदन के दो शब्द

परमात्मतत्त्व सर्वशक्तिमान है। दृश्यमान विश्व प्रपंचात्मक है। विश्व का मूलाधार धर्म है। धर्म का मूल वेद है। ब्रह्मविद्या से ब्रह्मज्ञान होता है। वेद और तंत्र ब्रह्मविद्या के ही दो रूप हैं। ब्रह्मविद्याप्रदायक अनादि अनन्त-अप्रतिम-अक्षुण्ण धर्म का नाम सत्यसनातन धर्म है। साम्प्रतिक सभी धर्मों, मतों एवं सभी सम्प्रदायों का मूल भी सनातन धर्म ही है।

सनातन धर्म में सिद्धशक्तिपीठ की भी विशेष महत्ता है। एक ही सनातन-तत्त्व की अभ्यर्चना जब पुरूष रूप में होती है तो उसे निगम कहते हैं और वही अर्चना जब स्त्री रूप में होती है तो उसे आगम कहते हैं। मूल तत्त्व का स्त्रीत्व रूप में आराधना का आधार सिद्धशक्तिपीठ है। भारत में अनेक शक्तिपीठ है। सबका अपना-अपना महत्त्व है। शुचिक्षेत्र निवासिनी महाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ का भी महत्त्व भारत के 51 शक्तिपीठों में मुख्य रूप से है। अनुसंधान के अभाव में यह स्थल गोपनीय था, तथा उपेक्षित भी। इस पावन स्थल को और महाशक्ति को स्वात्मानुसंधान से उद्घाटित का जन-जन को जगाना ही मेरे इस सुविस्तृत आलेख का उद्देश्य है। वैसे यह पुस्तक तो कठिन हिन्दी में लिखा गया है। अगले संस्करण में सरल रूप में सबको प्राप्त होगा।

भागलपुर जिलान्तर्गत नवगछिया अनुमंडल का वह गाँव धन्य है जहाँ माँ कालिका की अनादि प्रतिमा है साथ ही श्री लक्ष्मीवैंकटेश भी एवं भूलीलासहित श्री निवास जी की भी बहुमूल्य प्रतिमा है जो सम्पूर्ण भारत में मात्र तीन या चार जगह है। वैसे यह

गांव भी लगभग हजार वर्षों का है एवं सनातन धर्मनिष्ठ होने के कारण अनेक ईश्वरीय प्रतिकृति का केन्द्र है। मेरा यह आलेख 14 नवम्बर 1997 ई० को आज में छपा था। अंत में माता-पिता अपने समस्त गुरूजनों को, स्वेष्ट को, बुजुर्गों को, सहयोगियों को नमन निवेदित करता हूँ और अम्बिका से सम्पूर्ण मानवता के नित्यकल्याणलाभार्थ प्रार्थना करता हूँ।

मेरे अग्रज श्रीसुभाषचन्द्रपाण्डेय जी ने अपने वंदनीया माता श्रीमती सावित्री देवी एवं अर्चनीय पिताश्री स्व० प्रद्युम्न पाण्डेय जी की पुण्य स्मृति में इस रचना का प्रथम प्रकाशन कर अमित पुण्यार्जन किया था एतद्र्थ मैं उनका चिर आभारी हूँ और रहूंगा।

द्वितीय संस्करण एवं प्रस्तुत तृतीय का प्रकाशन अपनी पूज्या माता स्व० देवता देवी एवं अपने पूज्य पिता स्व० उमाशंकर चौधरी की अक्षय एवं पुण्य-स्मृति में मेरे दो धर्म प्रेमी आत्मीय श्रीमती बैजयंती देवी एवं श्री राजकमल चौधरी तथा श्रीमती मीनू चौधरी एवं नीलकमल चौधरी ने जनकल्याण के लिए कराया है। इसलिए इनके समस्त परिवार की सम्पूर्ण मंगलकामना के साथ भूरिशः आशीर्वाद देता हूँ।

निवेदयति
स्वामी आगमानन्दजी महाराज

महाश्मशानी उग्रकालिका
सिद्धशक्तिपीठ
नगरह-जहांगीरपुर बैसी, शुचिक्षेत्र
नवगछिया, भागलपुर, बिहार
२९/१०/२०१६

श्रीमहाश्मशानीकालिकादेव्यै नमः

महाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ

(संक्षिप्त इतिहास)

ओम जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

(श्रीदुर्गासप्तशती)

नमोऽस्तु त्रिगुणातीताय निर्गुणसगुणप्रणवाय च।
पंचदेवस्वरूपविग्रहाय धर्माय सनातनाय नमः।।

(स्वरचित श्लोकमाला)

निगमागममिश्रपथप्राधिकारपूर्ण सत्यनातनधर्म के अनुसार भगवतीश्रुतिस्मृति पुराणादिसच्छास्त्रानुसार अखिल सृष्टि, प्रकृति पुरूष की या शक्ति और शक्तिमान शिव की रहस्यमयी लीलास्थली तथा कौतुकक्रीड़ास्थली है। परमाप्रकृतिशक्ति प्रसृत निखिलविश्वब्रह्माण्ड अनन्य है, भारतवर्ष वस्तुतः सृष्टि में धन्य है। प्रमाणिक ग्रंथ श्री विष्णुपुराण में आज से करीब पांच हजार वर्ष पूर्व ही तत्त्वर्षि वेदव्यास जी अपराजितोद्घोषणा है कि

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरूषासुरत्वात्।।

भारतभूमि सौभाग्यपूर्ण इसलिए भी है कि मानव-जाति का उद्भव और विकास सर्वप्रथम भरत भूमि पर ही हुआ है। यह

हमारे शाश्वत मानदंड प्रत्यक्षप्रमाणस्वरूप वेदशास्त्रों से भी सिद्ध है तथा इसकी सम्पुष्टि अधुनातन वैज्ञानिक अनुसंधानों से भी निरूपित है।

सत्यसनातनधर्म प्रधान-प्रमुखता के कारण भारत आध यात्मिक दृष्टि से जगत्गुरू कल भी था, विश्वगुरू आज भी है और सृष्टिगुरू कल भी रहेगा। निर्गुणसगुणोभयगुणात्मक साधना-पद्धति की प्रकृत-प्रकृति से परिपूर्ण सनातनहिन्दूधर्म ही सम्प्रति विश्व में एकमात्र ऐसा धर्म है जिसके संस्थापक--संरक्षक-संव्यवस्थापक-संवाहक-सम्प्रेरक-सन्निदेशक साक्षात् सच्चिदानन्दघनस्वरूप परमगुरु परमेश्वर हैं या सच्चिदानन्दधनस्वरूपिणी विश्वविद्यागुरुरूपा विश्वाम्बा है। इसी कारण सनातन धर्म अनादि है और जिस धर्म का संस्थापक-संरक्षक-संवाहक सशरीर एकात्मनामरूपधारी व्यष्टि है वह धर्म सादि है। सादि सान्त हो सकता है, निश्चित है, पर अनादि सान्त नहीं हो सकता यह श्रुतिनिगदित सत्य है। अस्तु समग्र मानवों को स्व-स्व धर्मकर्मानुसार सनातन रीति से सर्वात्माननन्दमय परमसत्ता की सम्यक् समुपासना करते हुए, आत्मकल्याणलाभ का अधिकार हैं और करना भी चाहिए।

सम्प्रति अनेक धर्मों, मतों, पंथों एवं सम्प्रदायों के रहते हुए भी सम्पूर्ण विश्व में शक्तिपीठ का अपना विशेष महत्त्व आज भी विद्यमान है। इन शक्तिपीठों के निर्माण-रहस्य की व्यापक परिचर्चा पुराणादि ग्रंथों में सुप्रसिद्ध है। शाक्तमहापुराण श्रीमद्देवीभागवतानुसार सम्राट् दक्षप्रजापति द्वारा अनुष्ठित महायज्ञ में पिता के द्वारा अपमानित होने पर शिवार्धांगिनी भगवती सती ने

यज्ञाग्नि में या योगाग्नि में आत्मदाह किया। फलस्वरूप भगवान शिव के वीर-भद्रादि गणों ने दक्षप्रजापति के यज्ञ को विध्वंस कर उन्हें उचित दण्ड भी दिया। प्रिया वियोग से व्याकुल शिव सती के शव को कंधे पर लेकर मत्त होकर पागल-सा आकाश में प्रलयंकारी नाच नाचने लगे। प्रलयंकारी ताण्डव करते, कराल-क्रोध-ज्वाला में जलते भूतभावन शंकर का संतुलन बिगड़ते देख, सृष्टिकल्याणार्थ भगवान विष्णु ने सती के शव का टुकड़ा या अंग-प्रत्यंग और आभूषणादि का ब्रह्माण्डमण्डल में जहाँ-जहाँ, निपतन हुआ या गिरा, वह स्थान दिव्य शक्ति से संस्कारित, प्रस्फुरित, संवलित, संयुक्त हो गया, शक्ति-साधना का रहस्यपूर्ण पीठ बन गया, तथा वही शवांश या आभूषणांश कालान्तर में पाषाणी रूप धारण कर अपनी अनन्तानन्त शक्तियों से जनमानस को आकर्षित कर युग-युगान्तर के लिए अधिकतर जनमानस के श्रद्धा, तीर्थ, सत्संग, स्वाध्याय और आत्मानुसंधान का वैज्ञानिक केन्द्र बन गया। वे ही शुचितम-स्थल, चिन्मयी विद्युन्मयी-महिमामयी- ज्यातिर्नादविन्दुमयी-सच्चिदानन्दस्वरूपमयी परमशक्ति से संवलित होकर सिद्धशक्तिपीठ की संज्ञा से विभूषित हुए। मानव स्थपित-निर्मित-परिचालित शक्तिपीठ तो संसार में बहुत हैं, किन्तु महाशक्ति के परमानुग्रहपूर्ण कृपाप्रसादस्वरूप निगमागम वर्णित जिन-जिन विशिष्ट शक्त्युपासनात्मक महान पवित्र पीठों का प्रकृति की प्रकृत लीला से निर्माण हुआ है या उद्भव और विकास हुआ है, वह स्थान स्वयं में सिद्ध है, अतः सिद्धशक्तिपीठ कहलाता है। साधकों का सुविस्तृत इतिहास साक्षी है कि साधक यहाँ सदियों से अल्पसाधन से अल्प समय में, अल्प श्रम से ही अपरिमित आत्मलाभ,

सर्वसिद्धिलाभ, विज्ञान-प्रज्ञान-लाभ करते आ रहे हैं।

विभिन्न तंत्रग्रंथों के अनुसार एवं निगमिक प्रमाणिदि के अनुसार सिद्धशक्तिपीठ की संख्या एवं स्थानों के निरूपण-प्रापण-परिगणन में मतैक्य नहीं है। कतिपय ग्रंथ 51 सिद्धपीठ और कुल 108 पीठ मानते हैं। कहीं 102, 110 और अधिक संख्याओं को भी परिगणित किया गया है। किन्तु श्रीमद्देवी-भागवत, शारदातिलकतंत्रम्, तंत्रसार आदि प्रामणिक ग्रंथों के अनुसार नाम और स्थान अधिकांश ऐसे हैं, जो पहले मान्य थे। किन्तु जानकारी के अभाव में, प्रचार-प्रसार के अभाव में एवं परिवर्त्तशील-भौगोलिक -परिस्थितियों के कारण उपेक्षित रह गए हैं। कई शक्तिपीठों के स्थान निरूपण में भी भ्रांतियाँ छायी हुई हैं। कई पीठ अन्वेषण के अभाव में उपेक्षा के शिकार हैं। स्थान वही रहता है पर शासकीय प्रवृति एवं अन्य कारणों से गाँव, नगर एवं महानगरों के नाम बदलते रहते हैं जैसे बम्बई का मुम्बई मद्रास का नाम चेन्नई। किन्तु, जो कुछ भी हो, देश, काल, प्रकृति, प्रवृति, परिस्थिति और परिवेश आदि से स्थान, वस्तु, तत्त्व आदि की महत्ता कालक्रम में महती व्यक्तित्व से उद्घाटित, सत्यापित, परिस्थापित व निरूपित होती रहती है। यही प्रकृति की नियति और ऐतिहासिक दस्तावेज का दस्तूर है।

इसी तरह की उपेक्षाओं के शिकार भारत के एवं विशेषतः बिहार के कुछ प्रमुख शक्तिपीठ हैं। शास्त्रीय दृष्टिकोण से बिहार में केवल बैद्यनाथ धाम (देवघर) (अब झारखंड) में की सती की चिताभूमि ही सिद्धशक्तिपीठों में परिगणित होती है। किन्तु निगमागम

के वर्तमान सिद्धसाधकों का अभिमत है कि भगवती उग्रतारा मंदिर, ग्राम+पो०- महिषी, सहरसा, भगवती चण्डिका स्थान, ग्रा+पो० - विराटपुर, सोनवर्षाराज, सहरसा, माँ कात्यायनी स्थान, धमहरा घाट, खगड़िया; महाश्मशानी उग्रकालिका, ग्रा+पो०- नगरह+बैसी, नवगछिया, भागलपुर; चंडिका स्थान, मुंगेर आदि बिहार के कुछ और स्थल, साधनात्मक-दृष्टि से एवं अनुभूत्यात्मक दृष्टिकोण से अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली सिद्धशक्तिपीठ हैं। अतः तत्त्वबोधप्राप्त महान योगियों के अनुभव एवं अन्वेषण की आज आवश्कता महसूस होती है जो महत्त्वपूर्ण दिव्यशक्तिसंवलित स्थलों को प्रकाश में लाएँ।

प्रसंगानुसार महाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ का शास्त्रीय एवं व्यावहारिक, अनुभूत तथा प्रमाणभूत अन्वेषणात्मक अभिलेख जनहितार्थ प्रसतुत करना ही यहाँ अभिप्रेत है। महाश्मशानी उग्रकालिका का स्थान भी अत्यन्त प्राचीन है। गवेषणापूर्ण भौगोलिक सर्वेक्षण, भारत के अन्याय शक्तिपीठों के तुलनात्मक अध्ययन, आत्मानुसंधानात्मक चरमतत्त्वानुशीलन से अभिज्ञप्त होता है कि भगवती रौद्री शक्ति उग्रकालिका स्थान भी सिद्धशक्तिपीठों में परिगणनीय किंबहुना परिगणित है। शास्त्रों से एवं ऋतम्भराप्रज्ञा प्राप्त महाविभूतियों के अनुभूतिपूर्ण अभिवचनों से अभिप्रमाणित होता है कि यहाँ सती के शव का कटा हुआ सर्वप्रथम मुख सौन्दर्यविच्छिन्नक उर्ध्वदंतनासिकाग्र भाग का निपतन हुआ है। भारतवर्ष की सुप्रसिद्ध सात प्रधान नदियों में सर्वप्रधाना कलमलहरनिजननी विमल धवल-नवल-उच्छल-सजल-अमल-जलतरंगा-शुचितमा- देवापगा-भगवती -भागीरथी

-गंगा-तथा गाधिसुता सलिला-स्वरूप-संप्राप्ता कौशिकमुनि स्वसा शुभ्रा-शुचितरा कोशी के मध्यवर्ती संगम स्थल को अत्यन्त पवित्र होने के कारण निर्विवादित ऐतिहासिक भौगोलिक एवं शास्त्रपक्षीय सर्वेक्षण से शुचिक्षेत्र की संज्ञा से विभूषित किया जा सकता है। तंत्रग्रंथों से प्रमाणित है कि सती का उर्ध्वदंत भाग शुचिक्षेत्र में गिरा है। उनमें गिरने के स्थानों के प्राचीन नाम का विवरण है परन्तु आधुनिक परिवर्तिक स्थानों के नाम का उल्लेख नहीं मिलता। शुचिक्षेत्र के निरूपण में कतिपय शास्त्राचार्यो ने भी अज्ञात लिख दिया तथा चुप्पी साध ली है। परन्तु परमपरावरज्ञ महान तत्त्वज्ञों की पुरातात्त्विक गवेषणा एवं आधुनिक ऐतिहासिक प्रमाण भी साक्ष्य हैं कि कोशी नदी का उत्तर पूर्वी क्षेत्र शक्ति क्षेत्र कहलाता है तथा गंगा कोशी का संगम क्षेत्रीय मध्यभाग या आधुनिक भाषा में दियारा क्षेत्र ही अत्यन्त प्राचीन काल में शुचिक्षेत्र कहलाता था और आज भी कहा जाता है। इस प्रकार नदियों की संस्थिति और भौगोलिक विशेषता के कारण ही सम्पूर्ण प्राचीन आर्यावर्त भारत को आध्यात्मिक इतिहास में, भक्ति क्षेत्र, शक्ति क्षेत्र, शुचिक्षेत्र, साधना क्षेत्र, पुण्य क्षेत्र, सिद्धि क्षेत्र, मुक्ति क्षेत्र इन सात प्रकारों में या सात रूपों में विभक्त किया गया था फिर भी देश अविभक्त था। प्राचीन अंग देश का यह महत्वपूर्ण भाग, जो गंगा कोसी की संगमस्थली है और जहाँ दसो महाविद्या प्रधाना, सती संहार-भस्मोद्भूता विकरालिका महाश्मशानी उग्रकालिका की जीवंत प्रतिमा नित्य संवर्धनशील पाषाणी रूप में विद्यमान है आज भी पुरातात्विकों के अनुसंधानार्थ एक चुनौती है, कि सावन भाद्रो में नग्न नृत्य करती प्रबल प्रलय हुंकार भरती स्वेच्छया भूखण्ड को खण्ड-खण्ड करती करालिका कोशी इस

भागलपुर क्षेत्रीय शुचिक्षेत्राधिष्ठात्री उग्रकालिका के पावन स्थल को न काट सकी और विवश होकर दक्षिण उत्तर धारा में बहना पड़ा है।

वही शुचिक्षेत्र ऐतिहासिक अनुसंधानाभाव में धीरे-धीरे संकुचित और नामरूप की विकृति को प्राप्त करते हुए, क्रमशः शुचिक्षेत्र-शुचखेत शुचपूर-सेजपुर-बैजपुर-बैजनाथपुर होते हुए आज नगरह बैसी नाम से विभूषित है। यहाँ के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक सर्वेक्षण से पता चलता है कि वर्तमान मंदिर एवं नगरह बस्ती के दक्षिण पश्चिम दिशा में कोशी नदी थी। कालान्तर में जब कोशी मंदिर के उत्तर दिशा की ओर जाने लगी तो इस स्थान के प्रभाव के कारण ही न काट सकी और वहाँ दक्षिण-उत्तर बहती हुई चिर काल के लिए उत्तर दिशा चली गयी। वर्त्तमान कोशी नदी की धारा उसी समय से उसी स्थान से मंदिर से लगभग डेढ-दो कि०मी० की दूरी पर बह रही है।

अत्यन्त प्राचीन काल में जिस समय यहाँ कोई बस्ती, ग्राम नगर न थे केवल जंगल ही जंगल था, यह स्थल श्रेष्ठ साधकों का शरणस्थल एवं सिद्धिस्थल था। प्रमाणस्वरूप अनके अख्यात एवं प्रख्यात सिद्ध साधकों द्वारा माना जाता है कि ब्रह्मार्षि वशिष्ठ जी को वाममार्गीय तांत्रिक साधना के क्रम में महिषी, सहरसा में हुई विक्षिप्तता के पश्चात् इसी शुचिक्षेत्र में महाविद्याओं में प्रथम महाश्मशानी उग्रकालिका की एकान्त साधना से ही पूर्ण शान्ति और सर्वसिद्धि मिली एवं निर्विध्न तारा साधना का आशीर्वाद मिला। फिर वशिष्ठ जी तारापीठ (बंगाल) गए और महाविद्या तारा की समर्पित साधना से अमृत सिद्धि लाभ लिया। ठीक इसी प्रकार

रहस्यपूर्ण जनश्रुति है कि जब भगवान आद्य शंकाराचार्य जी शक्तिक्षेत्रस्थ महिषी तारा माँ के अनन्य साधक श्री मंडन मिश्र को दिग्विजय अभियान में पाराजित कर उनकी धर्मपत्नी परम विदूषी भारती देवी से पराजित हो गए तो उन्हें भी कुछ समय तक अपना मान मर्दन होते देख विक्षिप्तता हुई थी। विक्षिप्त एवं करूणा से विह्वल होकर रोते हुए शिवावतार शंकाराचार्य जी को देख करूणामयी माँ तारा ने इन्हें स्वप्नादेश दिया था कि जाओ शुचिक्षेत्र निवासिनी महाविद्याओं में वरेण्य माता उग्रकालिका की आराधना करो। वही कामबीजस्वरूपिणी हैं। अतः कामशास्त्र एवं सर्वशास्त्र का तात्त्विक और सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान कृपापूर्वक प्रदान करेंगी तथा तुम्हारे दिग्विजय अभियान का निर्देशन करती हुई विश्वविजयी धर्माचार्य होने का आशीर्वाद भी देगी। माँ तारा की प्रेरणा से आचार्य शंकर शुचिक्षेत्र ज्योंही पहुँचे कि माता कालिका ने एक बालिका का रूप धारण कर संस्कृत में उनसे एक प्रश्न कर दिया था। भगवान शंकर उसका उत्तर न दे सके और अतिशय भाव विह्वल स्तुति करने लगे थे। आशुकवि आचार्य शंकर की विश्वप्रसिद्ध देवपराधक्षमापनस्तुति की रचना इसी स्थान पर और इसी घटनाक्रम में हुई थी यह प्रसंग रहस्यपूर्ण रहा है। श्लोक की आरंभिक पंक्तियाँ है।

न मंत्र न यंत्रं तदपि च न जाने स्तुति महो,
न चाह्वनं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथा।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनम्
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।

इस स्तुति के बाद परमानन्दस्वरूपिणी माता कालिका ने

शिशुभावापन्न शंकर को अंक लगा लिया एवं निज साधना सम्पन्न कराकर विश्वविजयी होने का आशीर्वाद दिया और मार्ग-दर्शन भी। आशीर्वाद प्राप्त कर फिर वे दिव्यमार्गीय तंत्रसाधनात्मक प्रक्रिया से परकाया-प्रवेश कर कामशास्त्र का अध्ययन कर, पुनः स्वशरीर में आकर भारती को भी पराजित कर विश्वविजयी सत्यसनातन धर्माचार्य हुए। इस प्रकार अनेक रहस्यपूर्ण कथाओं और दृष्टांतों से स्पष्ट होता है कि यह पावन सथल अनादिकाल से ही भगवान शिव, अवधूत दत्तात्रेय, ब्रह्मार्षि वशिष्ठ, दुर्वासा, विश्वामित्र, विदेह, शुक्राचार्य आदि महान ऋषियों, जैन-बौद्ध-इस्लाम धर्मावलम्बी तंत्रविदों, भगवान आद्यशंकराचार्य, अभिनवगुप्तपादाचार्य, गुरू गोरखनाथ, कीनाराम अघोरी, स्वामी विशुद्धानन्द, अघोरेश्वर भगवान राम जैसे अनेक महान निगमागमाचार्यों, कर्म-ज्ञान-भक्ति विशेषज्ञों की चरम सिद्धि-साधना का अत्यन्त प्रसिद्ध केन्द्र था। आज भी विश्व के अनेक प्रसिद्ध तंत्रसाधकों एवं इस क्षेत्र के उच्चतम साधकों का गुह्यतंत्र योगादि साधना का अतिशय रहस्य प्रभावशाली केन्द्र माँ श्मशानी काली की साधना-उपासना की अनेक पद्धतियाँ हमारे धर्मशास्त्रों में वर्णित है। यहाँ साधनात्मक रहस्यों का वर्णन अभीष्ट नहीं है, अतः जनमानस के लाभार्थ क्रमशः ध्यान-मंत्र और मूल - मंत्र दिया जा रहा है -

ध्यान-मंत्र

श्वारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्,
चतुर्भुजां खडगमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालां धरां देवीं लल्लजिह्वां दिगम्बराम्,
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्।।

मूल-मंत्र

"ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्मशानकालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं"

यहाँ पर साधक शीघ्र ध्यानस्थ हो जाते हैं एवं चित्त में अतिशय आनन्द और परमशान्ति का अनुभव भी सहज स्वरूप में प्राप्त कर लेते हैं। अनेकानेक महत्त्व के कारण, वैदिक-तांत्रिक-मिश्रित, सभी प्रकार की उपासनाओं और सिद्धियों का यह अद्भुत महाकेन्द्र सम्पूर्ण भारतवर्ष का प्रमुख तीर्थस्थल और बिहार के भागलपुर एवं बाँका जिला का गौरव स्थल है।

कालान्तर में भक्तों की प्रबल भक्ति भावना से प्रसन्न होकर भगवती ने मंदिर-निर्माण का स्वप्नादेश दिया, फलस्वरूप आज यहाँ एक छोटा-सा मंदिर सबों के आत्मीय सहयोग से निर्मित है। अर्धशतकोत्तरीय वय वाले लोग भी सम्प्रति साक्षी है कि प्राचीन मंदिर परिसर में कई नागराज स्वर्ण-कलश पर कुण्डली मार कर बैठे दिखायी देते थे। शताधिकवयप्राप्त पूर्वजों के प्रत्यक्ष प्रवाहिता कोशिका अजस्ररूपेण प्रवहमान थी, उस समय मणियुक्त अतिविशाल नागदेवता दर्शन दिया करते थे। जंगलों के कट जाने पर आज भी अनेक अख्यात-प्रख्यात अज्ञात साधकों द्वारा सुनसान वियावान मंदिर-परिसर में, या अधिष्ठित अति प्राचीन विशाल वृक्षों के नीचे मणियुत नागाराज का दर्शन किया जाता है। स्थल की प्राचीनता के प्रमाण में प्राचीन कोशी की धारा की दिशा और स्वरूप तीन-चार अत्यन्त प्राचीन वृक्ष भी प्रमाणित कर रहे हैं कि कुछ काल पूर्व यहाँ घनघोर कानन था। इस प्रकार इस दिव्य-दर्शन-भूमि की पुरातनता के अनेक प्रमाण है जो अनुसंधित है और अनुसंधेय भी।

वर्तमान बरौनी-कटिहार रेलवे लाइन के मध्य नवगछिया स्टेशन से पूर्वोत्तर लगभग 4-5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह मंदिर अपनी अद्‌भुत शक्ति से सम्पन्न रहने पर भी मार्गीय दुरावस्था के कारण, अज्ञानता के कारण, प्रचार-प्रसार के अभाव के कारण, तथा भौतिकता के चकाचौंध के कारण आज उपेक्षित है। फिर भी प्रकृति की प्रकृतलीला से स्वतः उद्‌भूत इस प्रतिमा का नित्य नैमित्तिक और वार्षिक पूजनोत्सव होता रहा है। सम्प्रति विगत कुछ वर्षों से किसी विज्ञ साधक की सन्निधि एवं निर्देशिन में कुछ सुव्यवस्थित तथा वैधानिक पूजन हो रहा है। दूर-दूर से अनके उच्चकोटि के साधक, भक्तवृंद आते हैं और बलि नैवेद्य आदि से पूजन-अर्चन कर कृतार्थ होते हैं। जिस समय कोशी नदी की धारा अत्यन्त प्रखर थी। उस समय भी, एवं सामान्य होने भी यहाँ बड़ा ही भयावह श्मशान था। प्रतिदिन सैकड़ों शव की दाह-संस्कार प्रक्रिया सम्पन्न होती थी। किन्तु आज के भौतिकवादी युग के साधन व्यवस्था आदि के कारण जाह्नवी गंगातट पर ही सभी आदमी शव दाह प्रक्रिया के लिए जाने लग हैं। जबकि शास्त्रीय दृष्टि से, आध्यात्मिक महत्त्व की दृष्टि से तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी यहाँ शवदाह क्रिया को अनौचित्य नहीं माना जाना चाहिए बल्कि स्थान जागृति हेतु अवश्य करना चाहिए।

निष्कर्षाधार पर कहना अतिरंजित न होगा कि अपने नामरूपानुरूप अलौकिक शक्ति संयुता भगवती महाश्मशानी उग्रकालिका वीभत्सता लिए हुए भी अपने भक्तों एवं साधकों को बरबस आकृष्ट किए बिना नहीं रहती। स्थलीय विशेषता साक्षी है कि यह स्थल भी निश्चय ही भारत के प्रधान 51 शक्तिपीठों में एवं

दशमहाविद्याओं में सर्वप्रमुख है।

विशिष्ट साधनात्मक रहस्योद्‌घाटन सिद्धाचार्यों की सन्निधि में करना चाहिए एवं आत्मलाभ भी उन्हीं के निर्देशन में हो रही यही शास्त्रादेश है।

वस्तुतः परिवर्तनशील भौगोलिक परिस्थितियों प्राचीन जंगल परिवेश के कारण यह स्थान हिंसक पशुओं, विषैले एवं आक्रामक जीव जन्तुओं, कीट पतंगों से आक्रांत होने के कारणों भी कई सदियों तक उपेक्षित होकर अज्ञानान्धकार में रहा।

जैसा कि वर्त्तमान समय में 80-90 की आयु वाले बड़े बुजुर्ग भी कहते है कि मंदिर से मात्र 10-15 गज की दूरी पर प्रवहमान कोशी के तट पर अनेक मगरमच्छ रहते थे जो कई जानवरों और मनुष्यों को नदी की धारा में खींच कर खा जाते थे। बाद में वह धारा भी मृतप्राय हो गयी और धीरे-धीरे जंगल भी कटते गए तथा आस-पास लोग कृषि भी करते गए। दयालपुर के जमीन्दार श्री बिरंची प्र० सिंह का कामत यहीं पास में था। उनके पास एक मतवाला हाथी था। पुराकालीन साधकों द्वारा प्रतिष्ठापित वर्त्तमान पाषाण मूर्ति को हाथी जब चारा करने जंगल जाता तो सूढ़ में जल भरकर वह नहला देता एवं पौधों-वृक्षों के फूल-पत्तियों को तोड़ कर माँ काली के उपर चढ़ा देता। कभी-कभी वह जोर से सूढ़ भी हिलाता तथा कभी आँखों से अश्रुधारा भी बहाने लगता। महावत ने चारा खोजने के क्रम में ही उस हाथी को ऐसा करते देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। महावत ने अपने मालिक से सारी बातें कही। फिर कई लोगों के साथ बिरंची बाबू आए एवं उसकी प्रक्रिया देख अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए। अनन्तर अन्तःप्रेरणा के पश्चात्

कालिका की उस उर्ध्व निराकार अधोसाकार पाषाणी-प्रतिमा को खोदकर उठाने और निकालकर अन्यत्र स्थापित करने का सारा प्रयत्न निष्फल होने पर उसे वहीं स्थापित रहने दिया गया। बाद में वहीं पर मिट्टी का पिंडा बनाकर, चार लकड़ी के खूंटे से काला कपड़ा का चंदोवा लटका दिया। भगवती महाकाली के नित्य-नैमित्तिक पूजन भजन के लिए नगरह गांव के ही अपनी सुयोग्य कुलपुरोहित पंडित श्री बेचन झा को नियुक्त किया। फिर बाद में जहाँगीरपुर बैसी में ही उन्हें बसा दिया गया है। आज भी उनके वंश परम्परा के लोग पूजन करते है।

इस प्रकार नित्य पूजन, विशिष्ट पूजन एवं वार्षिकी महानिशा पूजन का कार्य बिरंची बाबू एवं समस्त ग्रामवासियों की देख-रेख में चलता रहा। अति दीर्घकाल के बाद जब लोग जंगलों का सफाया कर खेती करने लगे, फिर धीरे-धीरे वहाँ आस-पास गांव बसने लगे, तो अम्बिका कालिका के भक्तबृंदों ने चाहा कि यहाँ पर भव्यमंदिर का निर्माण हो। लेकिन खुले आकाश के नीचे प्रकृति के परम-पावन प्रांगण में, सुनसान-वियावान-श्मशान में रहनेवाली, मृतात्माओं के वक्षस्थल पर लास्य-नृत्य करनेवाली, महाशक्ति-विकरालिका भगवती उग्रकालिका आत्मेच्छा से, सबों के द्वारा, किए गए मंदिर- निर्माण-प्रयास को असफल करती रही। इस क्षेत्र के अनेक जिज्ञासु ज्ञानामृतपिपासु समर्पित भक्तों को भगवती माहेश्वरी अपना विराट स्वरूप, सौम्य स्वरूप एवं अगणित-अलौकिक-अप्रतिम चमत्कारी प्रभाव का अभिदर्शन, नग्नगगन निवासिनी महायोगिनी इसी क्रम में कराती रहीं। फलस्वरूप आज तक उस परम सत्य की सत्ता-महत्ता उदात्तता-सत्यता के कारण, सेवाभावी समर्पित-साधकों के श्रद्धा

विश्वास, निष्ठा-प्रतिष्ठा, पूजन-अर्चन की सनातन भावधारा यथावत् रही है। कई वर्ष बाद कुछ भक्तों के सहयोग से एक छोटा मंदिर बना जो अब धीरे-धीरे विकसित रूप ले रहा है। अन्य स्थलों की अपेक्षा इस सिद्धशक्तिस्थल कामाख्या, विंध्याचल, तारापीठ (बंगाल), गिरिनारदेवी जूनागढ़, छिन्नमस्तिका (रांची) आदि अन्यान्य शक्तिपीठों की तरह ही इसकी प्राचीनता, महत्ता गुणवत्ता स्वतः सिद्ध है। सम्पूर्ण भागलपुर एवं वर्तमान बाँका जिला में नवगछिया अनुमंडलान्तर्गत यह एकमात्र सिद्धशक्तिपीठ है जो नगरह-वैसी ग्राम के मध्य स्थित है और यह सम्पूर्ण राष्ट्र ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गुह्य साधना का केन्द्र है। यहाँ वैदिक और तांत्रिक दोनों पद्धतियों से देवी का पूजन होता है किन्तु तांत्रिक-साधना-सिद्धि का, अनादिकाल से ही यह महत्वपूर्ण स्थल है। अतः इसके विस्तृत इतिहास के अनुसंधान की आवश्यकता है। जिन मार्गीय दुरावस्था एवं अज्ञानता के कारण आज उपेक्षित है, आवश्यकता है, उसे दूर कर हम आप समग्र स्थानीय समाज एवं निखिल जनमानस एकत्र होकर इस पावन स्थल को विश्वस्तरीय तीर्थस्थल बनावे।

भाष्यकार रचनात्मक विवरणिका

स्वाध्याय क्षेत्र : सनातनधर्माध्यात्म, वेदवेदान्तादि, तंत्रशास्त्र, भारतीय-पाश्चात्य दर्शन, साहित्य, ज्योतिष, विज्ञान, आयुर्वेद, इतिहास, पुराण, आदि।

भाषाज्ञान : हिन्दी, संस्कृत, अंगिका, उर्दू, अंग्रेजी, मैथिली, भोजपुरी, बज्जिका, मगही, बंगला आदि।

अध्यापन : नन्दकुमार उ.वि. नगरह तथा जी.बी.कॉलेज नवगछिया में हिन्दी भाषा और साहित्य का पूर्व अवैतनिक अस्थायी रूप से अध्यापन।

सम्मानोपाधि : काव्यप्रज्ञ उ.प्र., महात्मा ज्योतिबा फूले सम्मान, दिल्ली, मानसरोवर शिखर साहित्य सम्मान म.प्र., राष्टभाषा विद्यालंकार, राष्ट्रभाषा गौरव उ.प्र., काव्य रत्न, पूरब-पश्चिम सम्मान मुम्बई, आदि से।

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संकलन - नवागत, प्रतिनिधि हस्ताक्षर, पंचामृत, जागो प्यारे हिन्दुस्तान, मानसरोवर, पूरब पश्चिम, गीत 2003 में रचनाएँ प्रकाशित तथा अन्य संकलनों में प्रकाशित।

कल्याण, धर्मायण, अंगदीप, आनन्दरेखा, चारूचंचला, जाग्रति, निर्वाणरत्न, यथार्थदंश, नालंदादर्पण, काव्यगंगा, वैश्यवसुधा, अंगिका साहित्यकार कोश, बगुला, आज, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, मिथि-मालिनी, कादम्बिनी, आजकल, आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

सम्पादन : 'अंगवाणी' (हिन्दी पत्रिका 2004-अक्टूबर से)

भूमिका लेखन : मनसिज उपवन (काव्य), श्रीवैदेहीभजनसंग्रह, इन्कलावी कलम, गुलदस्ता, श्रीदुर्गासप्तशती (हिन्दी), तेरी याद अचानक आयी।

प्रकाशित कृतियाँ : ध्यानयोगविज्ञान रहस्य, श्रीदुर्गाचरितमानस (दुर्गासप्तशती का रामचरितमानसवत् काव्यानुवाद) श्रीवैंकटेवर देवस्थानम्, महाश्मशानी उग्रकालिका सिद्धशक्तिपीठ (संक्षिप्त इतिहास), श्रीविषहरी चालीसा, श्रीकालीचालीसा, श्रीदुर्गा चालीसा, श्रीशिवशक्ति चालिसा श्री वेंकटेंश चालीसा, सटीक श्रीहनुमान चालीसा, श्रीशिव शक्ति आरती संग्रह, श्री लक्ष्मी गणेश स्तोत्रम्, श्रीदेवी गीता, श्रीईशावास्य-उपनिषद्।

संपादित कृतियाँ : श्रीदुर्गासप्तशती (संस्कृत), मानें करें तो।

अप्रकाशित कृतियाँ : बहुरंगिनी, तरंगिनी (काव्यसंग्रह) सीता-स्वयंवर, राम-वनवास, रावण-संहार (नाटक) साहित्याराधन (समालोचना), खिचड़ी फरोस (कथा संग्रह) भीड़तंत्र (उपन्यास) भारत दुर्दशा देखि न जाई (विचार) अंगभूमि के महिमा (अंगिका काव्य संग्रह) श्रीरामगीता, श्रीमनसोपाख्यान (अनुदित) सनातन भजनामृतरधारा (संकलन-संपादन), मानस का वैज्ञानिक अध्ययन (समालोचनात्मक)।

सम्प्रति : मानवतावादी मानक मूल्यों के संरक्षक, राष्ट्रीय अस्मिता के उन्मुक्त गायक, दीन-दलितोत्थानरत, सामाजिक-सांस्कृति उन्नयन के संपोषक, लोकमंगलोन्मुखी कार्यों के संबर्धक। आध्यात्मिकतत्त्वानुशीलननिरत, स्वतंत्र लेखन-चिंतनरत, जनमानससेवानिरत।